ग्रामोभ्युदयादेव देशोभ्युदयः

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय

कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय

पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे **निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून**

वर्षः 25 अंकः 53 बुलेटिन अवधिः 09 – 13 नवम्बर 2016 दिनः मंगलवार दिनाँकः 08 नवम्बर, 2016

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर **कृषि मौसम विज्ञान विभाग** में स्थित **कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर** द्वारा **उधम सिंह नगर एवं नैनीताल जिलों के मैदानी क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर				
	09–11–2016	10–11–2016	11–11–2016	12–11–2016	13–11–2016
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	28	28	28	29	29
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	8	8	9	9	10
बादल आच्छादन	साफ	साफ	साफ	बादल	बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	80	80	80	85	85
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	40	40	40	45	45
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	05	05	05	04	04
वायु की दिशा	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	पश्चिम	पश्चिम	दक्षिण–पश्चिम

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (1 से 7 नवम्बर, 2016 सुबह 8:30 तक) में आसमान में मध्यम रूप से बादल छाये रहे तथा 0.0 मिमी0 वर्षा हुई, अधिकतम तापमान 29.0 से 31.5 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 9.9 से 13.4 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 87 से 91 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 32 से 41 प्रतिशत एवं हवा 1.1 से 2.3 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पश्चिम–उत्तर–पश्चिम दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- तोरिया, पीली सरसों एवं राई की फसल में सफेद गेरूई एवं तुलासिता रोग के लक्षण दिखाई दे ंतो मैनकोजेब अथवा रीडोमिल एम0 जेड दवा की 2.0 कि0ग्रा0 मात्रा को 800 लीटर पानी में घोलकर /है0 की दर से छिड़काव करें।
- विलम्ब दषा में राई /सरसों की बुवाई नवम्बर माह में भी कर सकतें हैं। इस समय बुवाई हेतु वरदान एवं आषीर्वाद प्रजातियों का चयन करें। तथा कतार से कतार की दूरी 30 से0मी0 रखनी चाहिए। जमाव के 15 दिन बाद पौधों से पौधों की दूरी विरलीकरण द्वारा 15से0मी0 कर दें।
- खेत में खड़ी खरीफ में बोए गए धान, सोयाबीन, उर्द एवं मूँग, मूंगफली एवं तिल की फसलों की कटाई समय से अविलम्ब पूरा करें ताकि रबि फसलो की बुवाई समयानुसार षुरू कर सकें।
- राई एवं देर से बोई गई तोरिया एवं पीली सरसों में फूल आने से पूर्व हल्की सिंचाई करें। खेत में ओट आने पर बची हुई नत्रजन की टॉप ड्रेसिंग करें।
- तोरिया, पीली सरसों एवं राई की फसल में माहू का प्रकोप होने पर 1 लीटर मिथाईल–ओ–डेमिटान 25ई0सी0 को 800 लीटर पानी में घोलकर /है0 की दर से छिड़काव करें। छिड़काव अपराहन 2 बजे के बाद करे ताकि मधुमक्खी को हानि कम से कम हों।
- सिंचित दषा में दलहनी फसलों – चना, मसूर तथा मटर की बुवाई इस माह कर सकते है। मसूर एवं मटर की सामान्य बुवाई नवम्बर के प्रथम पखवाड़े में करें।
- मसूर की उन्नतषील प्रजातियों पंत मसूर–8, पंत मसूर–7, पंत मसूर–6, डी0पी0एल0–7 आदि की बीज की दर 30–40 कि0ग्रा0/है0 रखें तथा बुवाई हेतु कतार से कतार की दूरी 25 से0मी0 रखें।
- मटर की बौनी प्रजातियों – अपर्णा, मावीया मटर–15, डी0डी0आर0–23, पंत मटर–13,14,25,74 तथा सामान्य मटर की पंत मटर–42 का चुनाव करें। बौनी मटर हेतु बीजदर 125 कि0ग्रा0/है0 तथा सामान्य मटर हेतु 80–100 कि0ग्रा0/है0 रखें। मटर की सामान्य किस्मों हेतु कतारों में 30 से0मी0 की दूरी तथा बौनी किस्मों हेतु कतारों के बीच की दूरी 20–25 से0मी0 रखें।
- फसलों की बुवाई से पूर्व बीज उपचार अव'य करें।
- गेहूॅ के बीज का उपचार कार्बोक्सिन 2ग्राम/किग्रा से या टेबूकुनाजोल 1.5 ग्राम/किग्रा बीज की दर से करें।
- दलहनी फसलों हेतु थीरम 2 ग्राम + कार्बन्डाजीन 1 ग्राम/किग्रा बीज तथा तिलहनी फसलों में मैटालेक्जिल 6 ग्राम/किग्रा बीज की दर से उपचारित करें।
- जिन किसान भाईयों कि धान की फसल कट गई है उसकी मड़ाई करें।
- भण्डारण के लिए धान को काटकर अच्छी प्रकार सुखा लें ताकि उसमें नमी की मात्रा 12–14 प्रति'kत तक आ जाएं।

उद्यान प्रबन्धः

- फूल गोभी की अगेती एवं मध्यम अगेती फसल की सिंचाई करें खरपतवार निकालें एवं तैयार फूलो को तोड़कर बाजार भेंजे।
- बैगन की फसल में रस चूसने वाले कीड़ो से बचाव हेतु फसल पर फल तोड़ने के बाद मेलाथियान 0.1 प्रतिशत का घोल बनाकर छिड़काव करें।
- बैगन में पत्ति धब्बा रोग के प्रबंधन हेतु रोगग्रस्त निचली पत्तियों को खेत से निकाल कर नष्ट कर दे। एवं मैनकोजेब 2 ग्राम/लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- मटर को तना मक्खी के प्रकोप से बचाने के लिए कार्बोफ्यूरॉन 3 सी0जी0, 25 कि0ग्रा0/है0 की दर से बुवाई के समय खाद व बीज के साथ जमीन में डालें।
- टमाटर में फल बेधक का प्रकोप होने पर, क्लोरान्ट्रानिलिप्रोले 18.5 एस0सी0, 150मि0ली0/है0 या इन्डोक्साकार्ज 14.5 एस0सी0, 500मि0ली0/है0 की दर से प्रयोग करें।
- टमाटर की फसल में सफेद मक्खी का प्रकोप होने पर सायान्ट्रानिलीप्रोले 10.26 ओ0डी0, 900 मि0ली0/है0 या थियामेथोक्जाम 25 डब्लू0एस0जी0, 200 ग्राम/है0 की दर से प्रयोग करें।

- बैंगन में फल तथा तना वेधक का प्रकोप होने पर, फल ना लगे होने की अवस्था में क्लोरान्ट्रानिलिप्रोले 3.5 एच.सी. का 200 मिली प्रति हैक्टेयर की दर से तथा फल लगे होने की अवस्था में साइपरमैथरीन 25 ई.सी. का 200 मिली/हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- किसी भी कीटनाषी रसायन का एक बार से ज्यादा प्रयोग न करें।
- फल वृक्षों में गोबर की खाद 40–50 कि0ग्रा0/पेड़ के हिसाब से डाले।
- खाद एवं उर्वरक के प्रयोग हेतु पेड़ के नीचे थाला बनाए।
- दीमक का प्रकोप होने पर इमिडाक्लोरपिड 1 मि0ली0/लीटर अथवा क्लोरोपाइरीफॉस 4 मि0ली0/लीटर के हिसाब से फलों के मुख्य तने के पास थाला बनाकर प्रयोग करें।
- आवश्यकतानुसार बाग की सिचांई करें।

पशुपालन प्रबन्धः

- जिन पशुओं में एफ0एम0डी0 (मुखपका खुरपका) रोग के टीके नही लगें है उन पशुओं में तत्काल टीकाकरण करा लें। ताकि आपका पषुधन स्वस्थ रहे और उससे लगातार आपको सही उत्पादन प्राप्त होता रहें।
- खुरपका मुखपका के लक्षण– आँखें लाल होना, तेज बुखार होना (105–107°F), उत्पादन तथा आहार ग्रहण करने की क्षमता में कमी होना, मुहँ में छाले होना,लार गिरना समय से उपचार न मिलने की दषा में पषु के खुरों में घाँव बनना जिसकी वजह से पषुओं का लंगड़ाकर चलना आदि लक्षणों के आधार पर मुखपका खुरपका रोग की पहचान की जा सकती है। रोग के लक्षण पता चलते ही रोगी पषुओं को अन्य स्वस्थ पषुओं से तत्काल अलग कर दें। निकटतम पषु चिकित्सक की सलाह अनुसार उपचार करायें तथा स्वस्थ पषुओं को चारा देने के उपरांत ही अंत में पीड़ित पषुओं को मुलायम हरा चारा दें। तदुपरांत हाथों को लाल दवा से अच्छी तरह साफ करें।
- इस माह में जानवरों में खासकर भैसों में प्रसव दर अधिक बढ़ जाती है इसको ध्यान में रखते हुए पषुषाला को अच्छी तरह साफ–सुथरा, सूखा, रोषनीदार, हवादार होना चाहिए। इसके लिए नालियों में तथा आस–पास सूखे चूने का छिड़काव करें तथा जानवर के नीचे सूखा चारा बिछा दें। प्रसव के उपरांत स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें। ठंड का समय आ गया है अतः ठंड से बचाव हेतु पषुपालक इसकी ओर ध्यान दें।
- भैंस के 1–4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकैराविटूलूरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते है। इसे पटेरा रोग भी कहते है। समय से उपचार न होने की दषा में लगभग 50 प्रतिषत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान – नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग काली मिट्टी के समान होता है, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरा का होना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान कर सकते है। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औशधी का प्रयोग कर सकते हैं।
- पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पष्चात् 10–15सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पष्चात् पुनः 10–15 सी0सी0 नीम का तेल पिला दें। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।
- नवजात पषु की नाल को नए ब्लेड से काटकर उसमें गांठ लगा दें तथा उस पर बीटाडीन या टिंचर लगाना न भूलें।
- मुर्गियों में फफूँदजनित आहार देने से अपलाटॉक्सीकोषिष हो जाती है जिसकी वजह से काफी संख्या में उनकी मृत्यु होने की संभावना होती है। ऐसे में मुर्गियों को पषुचिकितसक की सलाह से दवा दें।
- पशुओं को हरा चारा में सूखा चारा अवश्य मिलाकर दें। अन्यथा आफरा (टिम्पेती) हो सकती है व पनीले दस्त हो सकते है, जिसकी वजह से उनकी मृत्यु हो सकती है।

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर